[Shri Yashwant Sinha]

The Governor has also reported that the situation is not conducive to holding of elections to the State Assembly in the near future. There is political vacuum in the Kashmir valley, with hardly any political activity among the people.

The Governor has accordingly recommended that the President's Rule in the State may be extended for a further period of six months from the date of its expiry.

Keeping in view the situation prevailing in the State and taking all the relevant factors into consideration, there seems to be no alternative but to continue the President's Proclamation dated 18-7-1990. It is, therefore, proposed that the President's Rule in Jammu & Kashmir may be continued for a further period of six months with effect from 3-3-1991.

In view of the position explained, I solicit the approval of this august House to the Resolution. Thank you, Madam.

The question was proposed.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Shankar Dayal Singh—not here; Shri M. C. Bhandare.

SHRI MURLIDHAR CHANDRABHANDARE (Maharashtra): Madam ... (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him speak.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: Madam, I rise to participate ... (*Interruptions*).

SHRI MAKHAN LAL FOTEDAR (Uttar Pradesh): Madam, let us pass it without discussion.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If the House so agrees.....

SOME HON. MEMBERS: Yes, yes.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: I can only end by saying that I share the concern and I hope that this will be one question which will be tackled on a war footing and there will be a consensus policy and programme and action evolved by the Prime Minister and the Government on this issue. With this, I commend this Proclamation.

THE DEPUTY CHAIRMAN: शर्मा जी आप भी ऐग्री करते हैं इस बात से because your name is there.

SHRI KRISHAN LAL SHARMA (Himachal Pradesh): Yes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Okay. I shall now put the Resolution moved by Shri Yashwant Sinha to vote.

The question is:

"That this House approves the continuance in force of the Proclamation issued by the President on the 18th July, 1990, under article 356 of the Constitution in relation to the State of Jammu and Kashmir, for a further period of six months with effect from the 3rd March, 1991."

The motion was adopted.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We shall now take up the other Statutory Resolution—Shri Subramanian Swamy.

RESOLUTION SEEKING APPROVAL OF PRESIDENT'S PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 IN RELATION TO TAMIL NADU.

THE MINISTER OF COMMERCE WITH ADDITIONAL CHARGE OF THE MINISTRY OF LAW (SHRI SUBRAMANIAN SWAMY): Madam Deputy Chairman, I rise to move:

"That this House approves the Proclamation issued by the President on the 30th January, 1991,

under article 356 of the Constitution in relation to the State of Tamil Nadu."

Copies of the Proclamation have been laid on the Table of the House.

In view of the circumstances which are known to the Government, and to the House, I commend that the Proclamation issued on 30th January 1991 under article 356 of the Constitution in relation to the State of Tamil Nadu may please be approved by this august House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Ram Jethmalani, not here; Mr. Murasoli Maran, not here. Mr. J. P. Mathur, not here.

SHRI MAKHAN LAL FOTEDAR (Uttar Pradesh): We can pass it.

AN HON. MEMBER: Shri Mathur has come.

SHRI JAGADISH PRASAD MATHUR (Uttar Pradesh): I had only gone to the bathroom.

THE DEPUTY CHAIRMAN: May I take the consensus of the House? The Members feel that it shouldd be passed.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : बड़ा मुश्किल हो गया । आज मुझे लगा कि बाथरूम जाना कितना नुकसानदेह होता है । (व्यवधान) मैं अपना प्रस्ताव मूव करता हूं :

> "यह सभा राष्ट्रपति से सिफारिश करती है कि तमिलनाडु राज्य के संबंध में उनके द्वारा 30 जनवरीई 1991 को संविधान के अनुच्छे, 356 के अधीन जारी की गई उद्घोषणा का प्रतिसंहरण किया जाये ।"

The questions were proposed.

THE DEPUTY CHAIRMAN: You may now speak, Mr. Mathur.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: But the length of his speech should be proportionate to the strength of his party in Tamil Nadu.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप जानते हैं यह राष्ट्रीय विषय है तमिलनाडु का विषय नहीं है । महोदया, इस विषय में मैं केवल आज की वर्तमान सरकार को जिम्मेदार नहीं मानता, जितनी भी सरकारें आयी हैं आज तक, तमिलनाडु की आज की स्थिति के लिये सब जिम्मेदार हैं । अनुच्छेद 356 का उपयोग कई बार किया गया होगा लेकिन जिस प्रकार से यह हुआ है यह बड़ा दुखद है । मैं खड़ा होकर जब यह कह रहा हूं कि प्रोक्लमेशन को रद्द किया जाये तो मैं जानता हूं यह आवाज बिल्कुल जंगल में खोई आवाज है । अनुच्छेद 356 के अन्दर जब कोई प्रोक्लमेशन हो जाय तो आवश्यक है कि दो मास के या एक निश्चित समय के दोनों सदनों से पारित किया जाना चाहिये । यहां बहुत से कानूनवेत्ता बैठे हैं मैं उनसे एक सवाल करना चाहता हूं कि यदि इस सदन में या उस सदन में या दोनों सदनों के अन्दर यह प्राक्लामेशन रद्द कर दिया जाय तो स्थिति क्या होगी । क्या तमिलनाडु की सरकार बाकायदा जिंदा हो जायेगी? क्या असेम्बली जिंदा हो जायेगी ? 356 धारा के अन्दर ऐसा कोई प्रावधान नहीं है । इसलिये मैंने कहा कि जब कोई असेम्बली डिजोल्व कर दी जाती है तो कोई भी सरकार हो, वह प्रस्ताव पुष्टि के लिये लाती है, वह बेमायने हो जाता है । एक बहुत बड़ा लैकूना हमारे कानून में है । यदि 356 अनुच्छेद के अन्तर्गत यह कहा जाता है कि अगर डिजोल्यूशन स्वीकार न हो तो असेम्बली जीवित हो जायेगी और सरकार बरकरार हो जायेगी तो इसकी पूर्ति हो जाती । लेकिन ऐसा कोई प्रावधान नहीं है । मुझे स्मरण है, जम्मू-कश्मीर की विधान सभा के बारे में अभी तक अदालत के अन्दर केस पड़ा हुआ है । मैं यह जानना चाहता हूं कि इस सदन से क्यों जान बूझकर पहले ही यह स्वीकार कर लिया गया कि सरकार की बात स्वीकार कर ली जायेगी ।

[जगदीश प्रसाद माथुर]

Why this presumption?

उचित तो यह था कि आप यह कहते कि हम इस सरकार को तो बर्खास्त करते हैं, लेकिन ऐसेम्बली को जीवित रखते हैं और इस सदन से रिक्वेस्ट करते हैं कि अगर वह उचित समझें तो इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लें या इसको विदड्रा कर ले, रिजेक्ट कर दे।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): You were the first to demand the dismissal of the DMK Government.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं एक स्मरण दिलाना चाहता हूं कि इस अनुच्छेद 356 का उपयोग बहुत सीमित रूप से किया जाना चाहिये। डा० अम्बेदकर ने इस विषय जो आश्वासन दिया था उस को मैं उद्धृत करना चाहता हूं। सरकारिया कमीशन की रिपोर्ट में भी यह कहा गया है—

"I do not altogether deny that there is a possibilty of these articles being abused or employed for political purposes.

In sum, the Constitution-framers conceived these provisions as more than a mere grant of overriding powers to the Union over the States. They regarded them as a bulwark of the Constitution."

मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि उन्होंने उन सब बातों को लागू किया है जो धारा 356 के अन्तर्गत किये जाने चाहिये। मैं सुझाव देना चाहता हूं और जैसा कि सरकारिया कमीशन ने भी सुझाव दिया था कि आर्टिकल 356 में संशोधन करना अनिवार्य है। इसलिये मेरा पहला सुझाव यह है कि जैसा कि सरकारिया कमीशन ने सुझाव दिया है, धारा 356 में संशोधन किया जाना चाहिये। दुःख तो यह है कि तमिलनाडु के सवाल के साथ श्रीलंका के सवाल को हर पार्टी ने जोड़ा है। जब श्रीमती इंदिरा गांधी का शासन था, कांग्रेस का शासन था तब से 31 ट्रेनिंग कैम्पस एल० टी०टी०ई० के चल रहे थे और अब श्री करूणा निधि के जमाने में कहा जाता है कि 332 कैम्पस हिन्दुस्तान में एल०टी० टी०ई० के चल रहे हैं। यह नक्शा बदल जाता अगर समझौता नहीं हुआ होता और श्री रामचन्द्रन की बात को स्वीकार नहीं किया गया। इस बीच में भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री करूणा निधि आ गये.. (**व्यवधान**) महोदय, मेरे ऊपर आगे पीछे से दबाव आ रहा है कि मैं जल्दी खत्म करूं। अगर आप लोग यही चाहते हैं तो मैं मोटी-मोटी बातें कहकर अपनी बातें समाप्त कर दूंगा। कांग्रेस (आई) की सरकार जिम्मेदार है एल०टी टी०ई० को ट्रेंड करने के लिये, रामचन्द्रन की सरकार जिम्मेदार है उनकी मदद करने के लिये और डी एम के० की सरकार जिम्मेदार है उनके साथ समझौता करने के लिये। मेरी पार्टी ने जलाई में उनका सारा चिट्ठा खोला था कि कौन कौन एल टी० टी०ई० के साथ समझौता कर रहे है। उल्फा के साथ उनका समझौता हुआ (**व्यवधान**)

उपसभापति : लंच करना है, इसलिये कह रहे हैं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : लंच के बाद दुबारा बोल लूंगा ... (**व्यवधान**) ...

उपसभापति : आपने जो कुछ बोला है वे सब बातें रिकार्ड हो गई हैं। मेरे पास और भी नाम हैं, लंच से पहले वे नाम भी पुकारने पड़ेंगे।

श्री ए० नल्ल शिवम्, श्री पी०के० कुंजालेन, श्री जो स्वामीनाथन, श्री डब्लू. कुलाबिधू सिंह, श्री सलारिया—कोई नहीं है।

Now I will first put the Statutory Resolution to vote. The question is:

That this House approves the Proclamation issued by the President on the 30th January, 1991, under article 356 of the Constitution, in relation to the State of Tamil Nadu.

The motion was adopted.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We will take up the Motion of Thanks on the President's Address after lunch. The House is adjourned for one hour.

The House then adjourned for lunch at twenty-seven minutes past one of the clock.

The House reassembled, after lunch, at thirty-two minutes past two of the clock, **The Vice-Chairman (Shri Bhaskar Annaji Masodkar)** in the Chair

RE. PRESIDENT'S RULE IN TAMIL NADU AND JAMMU AND KASHMIR

SHRI MURASOLI MARAN (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, we have been cheated. ...(*Interruptions*)... This is a fraud committed in this House. ...(*Interruptions*)...

SOME HONOURABLE MEMBERS: No.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKTR ANNAJI MASODKAR): Please sit down. You can't rise like this.

...(*Interruptions*)...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): ....(*Interruptions*).... Let the people of Tamil Nadu know that they ran away from the House. The DMK Members ran away from the House. ....(*Interruptions*)....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): You please go back to your seats..... (*Interruptions*)...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: They ran away. Let the people of Tamil Nadu know that they ran away from the House.

...(*Interruptions*)...

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): They are afraid of facing Parliament.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA (Andhra Pradesh): Sir, I want to say something.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): If you want to raise something, there is some procedure. ...(*Interruptions*)... If you want to say something, I will permit that, but not this way. Let us have an orderly House.

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, the matter is already over.

....(*Interruptions*)...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: The matter is already over. Nobody should be allowed to speak now. ...(*Interruptions*)... You cannot allow them to speak. The matter is already over.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please take your seats. ...(*Interruptions*)...

SHRI SURESH KALMADI (Maharashtra): Why did they walk out? ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Unless the House is in order, I cannot do anything .....(*Interruptions*) ...

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): You have no guts to face a discussion. You are * You are * ...(*Interruptions*)...

SHRI V. NARAYANASAMY: You ran away. You are * You did not want to face Parliament. ....(*Interruptions*)... You ran away.

SHRI M. VINCENT (Tamil Nadu): You ran away. ...(*Interruptions*)...

*Expunged as ordered by the Chair.